भोगे हुए दिन

भोगे हुए दिन का बासी पहर अब भी बचा था । बदली से सूरज के ढँके होने के कारण शाम का धोखा हो रहा था ।

ताँगा गली के मोड़ पर बने एक पुराने घर के सामने रुका । ताँगे में बैठे-बैठे ही मैंने शांदा साहब को पहचान लिया । वह नीम के पेड़ के नीचे कुर्सी पर बैठे थे । मुझे देखते ही उनका बूढ़ा शरीर प्रसन्नता से खिल उठा । वह एकदम मेरी तरफ बढ़े और मुझसे लिपट गए ।

"तो बरखुरदार, इस बूढ़े की याद आ ही गई," उनका चेहरा प्रसन्नता से भरा था । वह एकदम पलटे, और आवाज दी, "अरे बेटा जावेद आओ तो !"

दरवाजे पर टँगा परदा हिला, और एक दस साल का लड़का बाहर आया ।

"देखो बेटा, यह सूटकेस मेरे कमरे में रख दो ।"

ताँगे वाले के जाते ही हम आगे बढ़े । सामने लकड़ियों का ढेर पड़ा था, और एक आम के पेड़ के नीचे बड़ा-सा तराजू लटक रहा था । तराजू के पास एक आठ साल की लड़की बैठी थी जिसने बहुत गंदे कपड़े पहन रखे थे । उसकी चोटी से बाल निकलकर सारे मुँह पर बिखरे थे । इतने पर भी वह सुंदर लग रही थी । तराजू के एक पल्ले पर धूप थी, दूसरे में आम की परछाईं पड़ी थी । आम की परछाईं वाला पल्ला नीचे था, मानो धूप और परछाईं दोनों को तौला जा रहा हो ।

हम लोग लंबे और सूने बरामदे को पार कर रहे थे । शांदा साहब लकड़ी के सहारे चल रहे थे । उनका शरीर बहुत भारी था । बुढ़ापे का बोझा उठाने में उनके कंधे असमर्थ थे । दालान का सीमेंट बहुत पुराना था, और जगह-जगह से उखड़ा हुआ था । पूरे मकान को एक अजीब तरह की उदासी ने घेर रखा था, वैसे ही, जैसे अक्सर मुसलमानों के पुराने घरों में होती है ।

कमरे में जाते ही सामने के दरवाजे से आँगन का पूरा भाग सामने आ गया । कुएँ के पास एक बूढ़ी औरत कपड़े धो रही थी । मुझे समझते देर नहीं लगी कि यह शांदा साहब की पत्नी हैं । तपाक से मैंने सलाम किया । मुझे देखते ही वह घबरा-सी गई और बिना कुछ कहे बावर्चीखाने की तरफ बढ़ गई, जो वहीं, लकड़ी की जाफरी का बना हुआ था ।

शांदा साहब मुस्कराए, "अरे बेगम, यह तो अपना जगदलपुर वाला शमीम है जहाँ पिछली गर्मियों में मैं मुशायरे में गया था ।"

पर वह नहीं निकलीं । कमरा छोटा-सा था । इस कमरे से लगा एक और कमरा था, और उसकी दाहिनी ओर एक और कमरा था । वहीं लकड़ी की सीढ़ी ऊपर को गई थी । यह कमरा शांदा साहब का था । कमरे के बड़े भाग को तखत घेरे हुए था । दीवारों में बनी आलमारियों में देशी दवाएँ भरी थीं । एक पुराने सींग में एक सफेद रंग की गोल अजमेरी टोपी टँगी थी । एक तिपाई पर मेरा सूटकेस रखा था ।

शांदा साहब बाहर चले गए थे । सूटकेस से मैंने अपने कपड़े निकाल लिए । और मुँह धोने किधर जाऊँ सोच ही रहा था कि जावेद आया ।

"चलिए, गुसलखाना उधर है ।"

मैं जावेद के दिखाए, टट्टे के बने बाथरूम में चला गया जहाँ खड़े रहने पर आधा शरीर बाहर दिखता था । मैंने देखा, पीछे दालान सूनी है । कुएँ के पास टमाटर के कुछ पौधे लगे थे, जिनमें कच्चे-कच्चे टमाटर लटक रहे थे । बाथरूम का पानी एक कच्ची नाली से दीवार के पार जा रहा था जहाँ शायद दो-तीन बत्तखें पानी पी रही थीं । उनकी मोटी और भद्दी आवाज आ रही थी ।

मैं वापस कमरे में आया तो एकदम सामने से शांदा साहब आते दिखे । उनके एक हाथ में आठ आने वाली गुलाब छाप चाय की पुड़िया थी । मुझे देखते हुए पाकर वह झेंपे, फिर जल्दी से अंदर हो गए ।

तराजू के पास बैठी लड़की तौल-तौल कर लकड़ियाँ दे रही थी । लकड़ियों के ढेर पर चढ़े बकरी के छोटे-छोटे बच्चे दौड़ रहे थे । मुझे घर के घुटे-घुटे वातावरण से अजीब लग रहा था ।

जावेद मेरे सामने से निकला और लड़की के पास गया ।

"सोफिया, आठ आने दे, नानी बोली है ।"

"क्यों ?" लड़की ने अपनी जेब को कसकर पकड़ लिया, ताकि जावेद जोर-जबर्दस्ती से न ले जा सके ।

"कमरून खाला के यहाँ से दो अंडे लाने हैं, शाम की तरकारी के लिए, ला जल्दी दे ।"

लड़की ने जेब से आठ आने निकालकर दे दिए । जावेद चला गया । मैं लड़की के पास आ गया । गली में काफी चहल-पहल थी । घर के सामने औरतें, आदमी बैठे बीड़ी बना रहे थे । महाराष्ट्र में बीड़ी के काम से काफी लोग घर-बैठे कमा लेते हैं । यह एक ऐसा धंधा है कि अच्छे-अच्छे घर की औरतें पैसों की तंगी से घर में बीड़ी बनाती हैं । महाराष्ट्र में यह धंधा जितना अधिक है उतना कहीं नहीं । बीड़ी के कटे हुए पत्तों का ढेर जहाँ-तहाँ पड़ा था ।

शांदा साहब की एक ही विधवा लड़की है, जो पति के मरने के बाद उन्हीं के पास अपने दोनों बच्चों के साथ रहती है । उनकी लड़की प्रायमरी उर्दू स्कूल में टीचर है । उसी लड़की के ये दोनों बच्चे हैं ।